स्त्री विमर्श की कहानिया

प्रा. विजय सिंह ठाकुर
यशवंत महाविद्यालय, नांदेड़

स्त्री विमर्श आत्म चेतना आत्म सम्मान समानता और समान अधिकार की पहल का नाम है मुक्ति स्वतंत्रता अस्तित्व एवं अस्मिता से संबंधित जुड़ा हुआ है नारी विमर्श नारी मुक्ति एक विचारधारा है यह एक ऐसा विमर्श है जो नारी जीवन के पीड़ा जगत के उद्घाटन के अवसर पर कराता है एक टोकरी भर मिट्टी इस कहानी में एक विधवा स्त्री के माध्यम से जमीन दान द्वारा गरीब जनता पर होने वाले अन्याय को दर्शाया गया है विधवा स्त्री की दयनीय अवस्था और नियति द्वारा उसके परिवारिक सदस्यों का निधन होना व्यक्त करता है जमींदार के द्वारा जबरदस्ती उसके झोपड़ी पर कब्जा करना और झोपड़ी की एक टोकरी भर मिट्टी का उसके द्वारा उठना उसके अपराधी भाव को दर्शाता है अंततः इसी अपराध भाव का एहसास कहते हुए जमींदार का विधवा से माफी मांगना कहानी को आदर्श आत्मक स्तर पर उठाता है यह कहानी हिंदी की पहली कहानी होकर भी प्रभाव की दृष्टि से मौलिक है साल पहले तक महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर उनके सशक्तिकरण उनकी उपलब्धियों और संघर्षों पर उनके रचयिता हित और अवधारणाओं पर गंभीरता से चर्चा नहीं की जाती थी महिला लेखन को बहुत सन माननीय दर्जा प्राप्त नहीं था और जो दो चार महिलाएं करती थी उन्हें घर के सीमित दायरों की सीमित समस्याओं के घेरे में रचा का लेखन मानकर या घर बैठे महिलाओं का लेखन मानकर गंभीरता से नहीं लिया जाता था यह मेरा छोटा है परिवेश सीमित है तो बड़े फलक के मुद्दे कैसे उठाएगी डॉक्टर महादेवी वर्मा का कहना है कि आधुनिक परिस्थितियों में स्त्री की जीवनधारा ने किस दिशा को अपना पूर्ण आर्थिक स्वतंत्रता ही सबसे गहरे रंगों में चित्रित है महादेवी वर्मा जी भारतीय नारी की सदियों से चली आ रही पुरातन परंपराओं को तोड़कर आगे आने का करती है आपको मानना है ताकि नारियां पुरुषों से प्रतिदिन दूं के रूप में नहीं अपितु सहयोगी रूप में प्रतिस्पर्धा करके आगे आए ममता रात की अमन की मम्मी को लेकर प्रसाद ने यह कहानी लिखी है जब मुगलों का शासन भारत प्रतीत हो रहा था भारतीय हिंदू प्रजा या तो पराजित हो रही थी या मुगलों का शासन सरकार कर रही थी ममता के पिताजी चूड़ामणि रोहतास दुर्ग के मंत्री थे वह शेरशाह आक्रमण से डर कर उसकी अधीनता स्वीकार करने का निर्णय ले रहे थे तब ममता युवा और विधवा थी उसने पिता को अपने धर्म संस्कृति और करते हुए की याद दिलाई शेरशाह के सामने पिता को जीतने से रोक लिया पिता मारी रहें और ममता भागकर अजीवन झोपड़ी में अपना जीवन बिताती रही मुस्लिम आक्रमणकारियों के द्वारा उसके पिता की हत्या होने के बावजूद उसने एक मुस्लिम सैनिक को अपनी झोपड़ी में आश्रय देकर उसके प्राण यह कोई सामान्य सैनिक शहंशाह हुमायूं था विमान के साथ-साथ मानवीय कर्तव्यों की अभिव्यक्ति करने वाली प्रसाद की मौलिक कहानी है जो स्त्री विमर्श को एक नई दृष्टि भी देती है गुल्की बन्नो होम मानवीय संवेदना को गहरा अर्थ देने वाली कहानी है यह कहा स्त्री के इर्द-गिर्द घूमते हुए उसके चरित्र और जीवन को यथार्थ और स्वाभाविक दृष्टि से व्यक्त करती है कहानी का परिवेश और पात्र सभी स्वाभाविक सहज और यथार्थ लगते हैं यह कहानी गोलकी के माध्यम से सामाजिक सत्य बहुत का साक्षात्कार करने वाली कहानी है स्त्री जीवन मनोविज्ञान संघर्ष दुख आशा आकांक्षा अपने पूरे परिवेश के साथ अब तो हुए हैं इसके सिक्का बदल गया देश विभाजन पर लिखी की मौलिक कहानी है शाह ने एक हिंदू स्त्री है उसके पति शाह जी जब जीवित हैं तो उनका एक खास और बड़ा रुतबा था दूर-दूर गांव तक फैली जमीने गांव की जमीन दारी धन दौलत सब कुछ था शेरा नामक अनाथ बच्चे को उसने अपना बच्चा

माना था शाह जी की मृत्यु के बाद साहनी शेरा और हसीना के साथ रहती थी वह उन्हें अपना बेटा और बहू मानती थी वक्त गुजरता गया और आज साहनी को अपना गांव हवेली छोड़कर जाने की स्थिति आई बाहर बवाल हो रहा था अब सारी हवेली शेरा को सेना को देकर चली जाती है क्योंकि अब सिक्का बदल गया है प्रस्तुत कहानियां साहनी की देश विभाजन और विस्थापन की पीड़ा को पूरी संवेदना उनके साथ प्रस्तुत करती है एक स्त्री साहनी का हवेली छोड़कर जाते समय इस्माइल को कहती है कि सलामत रखे बच्चा खुशियां बक्से यह कहना जाति धर्म से बढ़कर इंसानियत की दुआ है शेरे खूनी सरिता साहनी के हवेली छोड़कर जाते समय दिल टूटना एक बच्चे का अपनी मां के प्रति प्रेम है या लेखिका ने धर्म से बढ़कर देश की सीमाओं से बढ़कर इंसानियत ए जज्बातों को पूरी गंभीरता से प्रस्तुत किया है और यह इतनी परेशानी के माध्यम से हुआ है साथ ही पति के अहम भाव को उर्वशी अहंकार दमन का पारंपरिक पुरुष पात्र बनाकर काल्पनिक कोनो से सहज स्वाभाविक था और स्थिरता के साथ प्रस्तुत होती है बल्कि का अपने पति के साथ उसकी सभी शर्तों को स्वीकारते हुए सात से जाना दर्द को दर्शाता है कहानी विस्तृत होकर भी भावों आ के कारण पाठक को आखिर तक छोड़कर रखने में सफल हुई है ! मृदुला ऐसी ही एक का कुछ देखने को मिलती है वैसे तुम मृदुल हसीना 19421 भारतीय लेखिका और राजनीति तत्व है जो वर्तमान में गांव के राज्यपाल के रूप में कार्यरत है गोवा में राज्यपाल मुजफ्फर जिले का छपरा गांव उनके पिता बाबू छबीले सी हम और मां अनुपा देवी थी बालिका आवासीय बालिका विद्यापीठ में पढ़ाई की रामकृपाल सीना से शादी हुई जो उस समय बिहार के मुजफ्फरपुर में स्थित एक कॉलेज में स्नातकोत्तर उपाधि उन्होंने ली 2014 को उन्हें गोवा के राज्यपाल के रूप में नियुक्त किया गया अपने राजनीतिक कार्य के साथ-साथ हिंदी साहित्य में लेखनी चलाई जिनमें उपन्यास तथा स्त्री मुक्ति पर लेखन किया उनके उपन्यास में नहीं देवयानी घर में जो मेहंदी को रंग चर्चित है बिहार की लोक कथाएं तथा ढाई बीघा जमीन शीर्षक से कहानी संग्रह उनका प्रसिद्ध है नगरीकरण औद्योगिकरण के वर्तमान युग में गांव और गांव की खेती बाड़ी का महत्व कम आंका जा रहा है महानगर महानगर की पैकेज वाली नौकरियां गाड़ियां महत्वपूर्ण बन गई है इसी वर्तमान मानसिकता में बदलाव लाने वाली मृदुला सिन्हा की एक कहानी है रामबाबू की बेटी सुभद्रा ने अपने जीवन में पहले तो गांव की पुश्तैनी जमीन के महत्व को लेकिन बेटी मनीष के पैकेट वाली नोट मंदी के कारण गाज गिराई तो यही ढाई बीघा जमीन बुरे दिनों में संजीवनी बन गई है जाम पैकेज वाले क्लार्क गाड़ी खरीदने वाले नवयुवक आत्महत्या करने को मजबूर है या मजबूर हो रहे हैं यही आधार बन गई शहरीकरण की तुलना में गांव गांव की खेती को जीवन जीने का आधार मानकर वही जीवन जीने के स्तोत्र ढूंढने को प्रेरित करती है खेती बेचकर महानगर की और भागने वाली नई पीढ़ी को यह कहानी सोचने के लिए मजबूर करती है और शहरीकरण वैश्वीकरण औद्योगिकरण के माया जाल से भारतीयों को बाहर निकालने का एक सफल प्रयास भी करती है !

संदर्भ ग्रंथ

1) माधव राव सपरे की कहानी ------- एक टोकरी भर मिट्टी
2) प्रेमचंद ठाकुर का कुआ --- जयशंकर प्रसाद
3) ममता---- धर्मवीर भारती
4) गुल्की बनो --------- सिक्का बदल गया है
5) मृदुला सिन्हा ढाई बीघा जमीन